5. वचन

किसी वस्तु अथवा प्राणी की एक से अधिक संख्या हो सकती है। इस एक-अनेक को व्याकरणिक भाषा में वचन कहते हैं। बच्चे एक-अनेक के लेखन में अधिकतर गलतियाँ करते हैं। यदि प्रारंभ से ही उन्हें वचन का बोध सही रूप अथवा तरीके से करवाया जाए तो भाषा लेखन में उनकी वचन संबंधी त्रुटियों को दूर किया जा सकता है।

- शिक्षक/शिक्षिका सर्वप्रथम बच्चों को बताएँ कि कुछ नामों अथवा चीज़ों को छोड़कर संसार की सभी वस्तुओं की संख्या एक से अधिक हो सकती है। कुछ वस्तु जैसे– सूरज, चाँद, आसमान आदि अपवाद हैं।
- बताएँ, शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु या प्राणी के एक से अधिक संख्या में होने का बोध होता है, वह वचन कहलाता है।
- वचन के रूपों एकवचन, बहुवचन के बारे में समझाएँ।
- वचन को सरलता से समझाने के लिए आसपास की वस्तुओं को माध्यम बनाया जा सकता है। जैसे– बच्चों से पूछें, कक्षा में कितने पंखे हैं, मेज़-कुर्सी की कितनी संख्या है अथवा बच्चों के पास एक पेंसिल है अथवा दो-तीन। एक पेंसिल एकवचन है, 2-3 पेंसिलें बहुवचन हैं आदि।
- एकवचन-बहुवचन समझाने के उपरांत अब इनके लेखन पर ध्यान दें।
- एक-अनेक शब्द लिखते समय बच्चे अधिकांशतः अशुद्धियाँ करते हैं। उन्हें सिखाया जाए कि बहुवचन लिखते समय (ा) के ऊपर ही (ँ) की मात्रा लगाई जाती है, इस प्रकार से –(ाँ)।
- बच्चों को समझाएँ– एकवचन **या** का बहुवचन **याँ** होगा।
- अकारांत बहुवचन में **क** का **कें** होगा। इस प्रकार – पुस्त**क**-पुस्त**कें**।
- आकारांत बहुवचन में पं**खा** का पं**खे** होगा।
- ईकारांत बहुवचन में **ई** - **इ** या **याँ** में बदल जाती है। जैसे – तित**ली** - तितलि**याँ**
- बार-बार अभ्यास करवाने से बच्चों को बहुवचन लेखन भली-भाँति समझ आ जाएगा। उन्हें कितना समझ आया है इसके लिए मौखिक अभ्यास करवाएँ। शब्दों के बहुवचन रूप पूछें।
- पाठ प्रश्न अभ्यास करवाते समय प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दें और उचित सहायता भी करें।